27

प्रेरिताई का बाद का इतिहास

I. पौलुस का बाद का इतिहास

1. उसका छूटना; बाद का इतिहास। –पौलुस के आत्मविश्वास (फिलि. 1:25, 26; 2:24; फिले. 22), और उन घटनाओं तथा उसके प्रारम्भिक इतिहास से मेल न खाने वाली यात्राओं के संकेत विश्वव्यापी परम्परा से उसके रोम के पहले कारावास से छूटने से मिलते हैं।

1 तीमुथियुस और तीतुस से हमें पता चलता है कि वह फिर इफिसुस में गया, क्रेते का दौरा किया और मकिदुनिया और यूनान में दोबारा गया। इस दौरान उसने तीमुथियुस के नाम पहली पत्री और तीतुस की पत्री लिखी।

2. उसका अंतिम कारावास तथा शहीदी। –पौलुस को 63 ई. में जेल से छोड़ दिया गया था। रोम की प्रसिद्ध आग उससे अगले वर्ष लगी। शक की सुई अपने ऊपर से हटाने के लिए, सम्राट नीरो ने मसीही लोगों पर आरोप लगाकर उनका सबसे पहला शाही सताव शुरू किया। पौलुस जो रोम से कुछ दूरी पर था, ने कुछ समय तक अपना काम जारी रखा। परन्तु, अंत में उसे गिरफ़्तार करके रोम ले गए। बहुत अधिक सम्भावना है कि उस पर आगजनी भड़काने का आरोप लगाया गया। उसका दूसरा कारावास पहले से कहीं अधिक भयंकर था। जेल से ही, जल्द शहीदी पाने की उम्मीद से, उसने अपनी अंतिम पत्री, दूसरा तीमुथियुस लिखी। उसके सामने सबसे कठिन चुनौती पुराने मित्रों का न होना, या उसे छोड़ जाना थी। लूका अंत तक उसके साथ रहा। पवित्र शास्त्र से इस बुज़ुर्ग प्रेरित पर जो ताजा रोशनी पड़ती है वह दूसरा तीमुथियुस के अंतिम अध्याय से मिलती है; परन्तु विश्वसनीय परम्परा के अनुसार, उसे 68 ई. के लगभग शहीद कर दिया गया था। रोमी नागरिक होने के कारण पौलुस को मसीही लोगों को तड़पा तड़पाकर दी जाने वाली मौत नहीं दी गई होगी। सम्भवत: उसे रोम की चारदीवारी के बाहर सिर धड़ से अलग करके मारा गया। इस प्रकार अन्यजातियों का महान प्रेरित मर गया, जिसका जीवन और लेख मनुष्य द्वारा आगे की पीढ़ियों के लिए दी गई सबसे बड़ी धरोहर हैं।

II. दूसरे प्रेरितों का बाद का इतिहास

1. पतरस की अंतिम झलक। –प्रेरितों के काम में पतरस का सबसे नया हवाला प्रेरितों की सभा में मिलता है (प्रेरितों 15:7–11)। छह वर्ष बाद लिखी गलतियों के नाम अपनी पत्री में पौलुस पतरस के दुराव की बात करता है (गला. 2:9–14)। यह घटना शायद उस सभा के तुरन्त बाद और पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा से पहले घटी थी। नये

नियम में यह पतरस का अंतिम ऐतिहासिक संकेत है। परन्तु हमारे पास उसकी दो पत्रियां भी हैं। पहली पत्री बाबुल से जो सज़्भवत: रोम के लिए प्रतीकात्मक शज़्द है, एशिया माइनर के मसीही लोगों के नाम लिखी गई है (1 पत. 1:1; 5:13)। सीलास और मरकुस के हवालों से यह लगता है कि यह पत्री पौलुस द्वारा रोमी की पहले और दूसरे कारावास के दौरान लिखी गई थी। दूसरी पत्री से हमें पौलुस की पत्री का परिचय (2 पत. 3:15, 16) और शहीदी पाने की पतरस की उज़्मीद (2 पत. 1:13-15; *तु.* यूहन्ना 21:18, 19) का पता चलता है। प्रारज़्भिक मसीही लेखकों के साथ, यह उज़्मीद पौलुस की मृत्यु के शीघ्र बाद रोम में पूरी हुई। पतरस को रोमी नागरिकता प्राप्त नहीं थी इसलिए उसे अपने प्रभु की तरह क्रूस का कष्ट सहना पड़ा। यदि परज़्परा को माना जाए, तो उसने यह बिनती की थी कि वह अपने प्रभु की तरह कष्ट सहने के अयोग्य है इसलिए उसे उल्टा लटकाया जाए।

2. यूहन्ना का बाद का जीवन। -प्रेरितों के काम के इतिहास से यूहन्ना बहुत पहले निकल जाता है। उसका अंतिम उल्लेख सामरिया में फिलिप्पुस के काम के सज़्बन्ध में है (प्रेरितों 8:14, 25)। प्रेरितों के काम में होने वाली सभा से उसका नाम नहीं जुड़ा (प्रेरितों 15); लेकिन पौलुस उसका सज़्बन्ध उससे बताता है (गला. 2:9)। यद्यपि सुसमाचार के प्रचार के काम में वह प्रमुखता से सामने नहीं आता, परन्तु पौलुस के बाद उसके लेखों का स्थान भी प्रेरितों में सबसे महत्वपूर्ण है। सुसमाचार की अंतिम पुस्तक, तीन पत्रियां और प्रकाशितवाज़्य उसी द्वारा लिखी गई पुस्तकें हैं। उसके अंतिम वर्ष सज़्भवत: एशिया माइनर में बीते, जिसमें इफिसुस उसके कार्य का केन्द्र था। उसे एक वर्ष के लिए पतमुस के टापू में देश निकाला दिया गया (प्रकाशित. 1:9), जहां उसने प्रकाशितवाज़्य की पुस्तक लिखी। वह ट्राजन के शासन तक (98-117 ई.) जीवित रहा और शताज़्दी के अंत के लगभग मरकर, शायद एक मात्र ऐसा प्रेरित बना जिसने अपने विश्वास पर अपने लहू से मोहर नहीं की।

3. दूसरे प्रेरित -निष्कर्ष। -जैसे हमने पहले देखा है (प्रेरितों 12:1, 2) यूहन्ना का भाई याकूब, पहले ही शहीद हो गया। यह पज़्का नहीं है कि नया नियम दूसरे प्रेरितों के बारे में कोई और बात बताता है। याकूब और यहूदा की दो पत्रियां रह जाती हैं। उनके लेखकों की पहचान एक अनसुलझा प्रश्न है, यद्यपि अधिकतर विचार यीशु के भाइयों के पक्ष में हैं। परज़्परा के अनुसार प्रेरितों ने अलग-अलग देशों में जाकर सुसमाचार का प्रचार किया, और यूहन्ना को छोड़कर बाकी सब प्रेरित शहीद हुए।

सबके अंतिम परिश्रमों पर आधारित अस्पष्टता, चाहे वह सबसे बड़ा प्रेरित ज़्यों न हो बहुत गहरी है। प्रेरितों के इतिहास में निजी तत्व गौण है। लोगों के आस पास कुछ दिलचस्पी इकट्ठी होती है; परन्तु प्रमुख दिलचस्पी बढ़ते जा रहे दायरों वाले काम में केन्द्रित है। दूसरी ओर, सुसमाचार के इतिहास में निजी तत्व प्रमुख है। दिलचस्पी *व्यज़्ति* में केन्द्रित होती है। मसीह स्वयं अपनी किसी बात या काम से ऊपर है। पृथ्वी से उसके जाने पर कोई उलझन नहीं है। वह न केवल सुसमाचार का या नये नियम का ही बल्कि पूरी बाइबल की कहानी का अर्थात कमान का मुज़्य पत्थर है। *उसके* बिना पूरी इमारत ही आशाहीन विनाश में गिर जाएगी; *उसके* साथ यह अद्वितीय और सदा रहने वाली सुन्दरता में खड़ी है।